

سُورَةُ الْحَدِيدِ

Surah 57 — Al-Hadid (The Iron) · Medinan · 29 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ

जो जो चीज़ सारे आसमान व ज़मीन में है सब खुदा की तसबीह करती है और वही ग़ालिब हिकमत वाला है

2

لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ يُحْيِي ۚ وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

सारे आसमान व ज़मीन की बादशाही उसी की है वही ज़िलाता है वही मारता है और वही हर चीज़ पर कादिर है

3

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

वही सबसे पहले और सबसे आखिर है और (अपनी क़वतों से) सब पर ज़ाहिर और (निगाहों से) पोशीदा है और वही सब चीज़ों को जानता

4

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ
مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۚ وَهُوَ
مَعَكُمْ أَيَّنَ مَا كُنْتُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

वह वही तो है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को छह : दिन में पैदा किए फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ जो चीज़ ज़मीन में दाखिल होती है और जो उससे निकलती है और जो चीज़ आसमान से नाज़िल होती है और जो उसकी तरफ चढ़ती है (सब) उसको मालूम है और तुम (चाहे) जहाँ कहीं रहो वह तुम्हारे साथ है और जो कुछ भी तुम करते हो खुदा उसे देख रहा है

5

لَهُ ۚ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

सारे आसमान व ज़मीन की बादशाही ख़ास उसी की है और खुदा ही की तरफ कुल उमूर की रूजू होती है

6

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَهُوَ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

वही रात को (घटा कर) दिन में दाखिल करता है तो दिन बढ़ जाता है और दिन को (घटाकर) रात में दाखिल करता है (तो रात बढ़ जाती है) और दिलों के भेदों तक से खूब वाक़िफ़ है

7

ءَامِنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَأَنْفِقُوا ۚ مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلَفِينَ فِيهِ ۚ فَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا ۚ لَهُمْ أَجْرٌ ۚ كَبِيرٌ ۚ

(लोगों) खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिस (माल) में उसने तुमको अपना नायब बनाया है उसमें से से कुछ (खुदा की राह में) खर्च करो तो तुम में से जो लोग ईमान लाए और (राहे खुदा में) खर्च करते रहें उनके लिए बड़ा अज़्र है

8

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا ۚ بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

और तुम्हें क्या हो गया है कि खुदा पर ईमान नहीं लाते हो हालाँकि रसूल तुम्हें बुला रहे हैं कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ और अगर तुमको बावर हो तो (यक़ीन करो कि) खुदा तुम से (इसका) इक़रार ले चुका

9

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَىٰ عَبْدِهِ ۖ ءَايَاتٍ ۚ بَيِّنَاتٍ ۚ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

वही तो है जो अपने बन्दे (मोहम्मद) पर वाज़ेए व रौशन आयतें नाज़िल करता है ताकि तुम लोगों को (कुफ़्र की) तारिक़ीयों से निकाल कर (ईमान की) रौशनी में ले जाए और बेशक खुदा तुम पर बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا يَسْتَوِي
مِنْكُمْ مَنۢ أَنفَقَ مِنۢ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَتْلَ ۚ أُو۟لَٰئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً ۚ مِّنَ الَّذِينَ أَنفَقُوا ۚ
مِنۡ ۚ بَعْدُ وَقَتْلُوا ۚ ۚ وَكُلًّا ۚ وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

और तुमको क्या हो गया कि (अपना माल) खुदा की राह में खर्च नहीं करते हालाँकि सारे आसमान व ज़मीन का मालिक व वारिस खुदा ही है तुममें से जिस शख्स ने फतेह (मक्का) से पहले (अपना माल) खर्च किया और जेहाद किया (और जिसने बाद में किया) वह बराबर नहीं उनका दर्जा उन लोगों से कहीं बढ़ कर है जिन्होंने बाद में खर्च किया और जेहाद किया और (यूँ तो) खुदा ने नेकी और सवाब का वायदा तो सबसे किया है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे खूब वाकिफ़ है

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ فَيُضْعِفُهُ ۚ لَهُ ۚ وَلَهُ ۚ أَجْرٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

कौन ऐसा है जो खुदा को खालिस नियत से कर्जें हसना दे तो खुदा उसके लिए (अज्र को) दूना कर दे और उसके लिए बहुत मुअज्जिज़ सिला (जन्नत) तो है ही

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُم بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِم بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ
جَنَّتُمْ ۚ تَجْرَىٰ مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

जिस दिन तुम मोमिन मर्द और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन (के ईमान) का नूर उनके आगे आगे और दाहिने तरफ चल रहा होगा तो उनसे कहा (जाएगा) तुमको बशारत हो कि आज तुम्हारे लिए वह बाग़ है जिनके नीचे नहरें जारी हैं जिनमें हमेशा रहोगे यही तो बड़ी कामयाबी है

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ انظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِن نُّورِكُمْ قِيلَ
أَرْجِعُوا ۚ وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوا ۚ نُورًا ۚ فَضُرِبَ بَيْنَهُم بِسُورٍ ۚ لَهُ ۚ بَابٌ ۚ بَاطِنُهُ ۚ
فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظُهُرُهُ ۚ مِن قَبْلِهِ الْعَذَابُ

उस दिन मुनाफ़िक मर्द और मुनाफ़िक औरतें ईमानदारों से कहेंगे एक नज़र (शफ़क़त) हमारी तरफ़ भी करो कि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रौशनी हासिल करें तो (उनसे) कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे (दुनिया में) लौट जाओ और (वही) किसी और नूर की तलाश करो फिर उनके बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा (और) उसके अन्दर की जानिब तो रहमत है और बाहर की तरफ अज़ाब तो मुनाफ़िकीन मोमिनीन से पुकार कर कहेंगे

يُنَادُونَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۚ قَالُوا ۚ بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ
وَغَرَّكُمْ الْأَمَانِيُّ حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ

(क्यों भाई) क्या हम कभी तुम्हारे साथ न थे तो मोमिनीन कहेंगे थे तो ज़रूर मगर तुम ने तो खुद अपने आपको बला में डाला और (हमारे हक़ में गर्दिशों के) मुन्तज़िर हैं और (दीन में) शक़ किया किए और तुम्हें (तुम्हारी) तमन्नाओं ने धोखे में रखा यहाँ तक कि खुदा का हुक्म आ पहुँचा और एक बड़े दगाबाज़ (शैतान) ने खुदा के बारे में तुमको फ़रेब दिया

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ ۚ وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مَأْوِيَكُمْ النَّارُ ۚ هِيَ
مَوْلَاكُمْ ۚ وَيَسَّ الْمَصِيرُ

तो आज न तो तुमसे कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न काफ़िरों से तुम सबका ठिकाना (बस) जहन्नुम है वही तुम्हारे वास्ते सज़ावार है और (क्या) बुरी जगह है

ۚ أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا
يَكُونُوا ۚ كَالَّذِينَ أُوتُوا ۚ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۚ
وَكَثِيرٌ ۚ مِنْهُمْ فَسِقُونَ

क्या ईमानदारों के लिए अभी तक इसका वक़्त नहीं आया कि खुदा की याद और कुरान के लिए जो (खुदा की तरफ से) नाज़िल हुआ है उनके दिल नरम हों और वह उन लोगों के से न हो जाएँ जिनको उन से पहले किताब (तौरत, इन्जील) दी गयी थी तो (जब) एक ज़माना दराज़ गुज़र गया तो उनके दिल सख़्त हो गए और इनमें से बहुतेरे बदकार हैं

أَعْلَمُوا ۚ أَنْ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ

जान रखो कि खुदा ही ज़मीन को उसके मरने (उफ़तादा होने) के बाद ज़िन्दा (आबाद) करता है हमने तुमसे अपनी (कुदरत की) निशानियाँ खोल खोल कर बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो

إِنَّ الْمُسَدِّقِينَ وَالْمُصَدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا؟ ۚ اللَّهُ قَرْضًا حَسَنًا ۚ لَا يُضْعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

बेशक खैरात देने वाले मर्द और खैरात देने वाली औरतें और (जो लोग) खुदा की नीयत से खालिस कर्ज देते हैं उनको दोगुना (अज्र) दिया जाएगा और उनका बहुत मुअज्जिज सिला (जन्नत) तो है ही

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّيقُونَ ۚ وَالشُّهَدَاءُ ۚ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَكَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِنَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

और जो लोग खुदा और उसके रसूलों पर ईमान लाए यही लोग अपने परवरदिगार के नजदीक सिद्दीकों और शहीदों के दर्जे में होंगे उनके लिए उन्ही (सिद्दीकों और शहीदों) का अज्र और उन्हीं का नूर होगा और जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग जहन्नुमी हैं

أَعْلَمُوا؟ ۚ أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ ۚ وَلَهُمْ ۚ وَزِينَةٌ ۚ وَتَفَاخُرٌ ۚ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ ۚ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۚ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ۚ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرَاهُ مُمْصَفَرًا ۚ ثُمَّ يَكُونُ حُطَمًا ۚ ۚ وَفِي ۚ أَلْءَاخِرَةِ عَذَابٌ ۚ شَدِيدٌ ۚ وَمَغْفِرَةٌ ۚ مِّنَ ۚ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۚ ۚ وَمَا ۚ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَّعُ ۚ الْغُرُورِ

जान रखो कि दुनियावी ज़िन्दगी महज़ खेल और तमाशा और ज़ाहिरी ज़ीनत (व आसाइश) और आपस में एक दूसरे पर फ़ख्र करना और माल और औलाद की एक दूसरे से ज्यादा ख्वाहिश है (दुनियावी ज़िन्दगी की मिसाल तो) बारिश की सी मिसाल है जिस (की वजह) से किसानों की खेती (लहलहाती और) उनको खुश कर देती थी फिर सूख जाती है तो तू उसको देखता है कि ज़र्द हो जाती है फिर चूर चूर हो जाती है और आखिरत में (कुफ़र के लिए) सख्त अज़ाब है और (मोमिनों के लिए) खुदा की तरफ से बख़्शिश और खुशनूदी और दुनियावी ज़िन्दगी तो बस फ़रेब का साज़ो सामान है

سَابِقُوا؟ إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ؟ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ
لِلَّذِينَ ءَامَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ؟ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

तुम अपने परवरदिगार के (सबब) बख्शिश की और बेहिश्त की तरफ लपक के आगे बढ़ जाओ जिसका अर्ज आसमान और
ज़मीन के अर्ज के बराबर है जो उन लोगों के लिए तैयार की गयी है जो खुदा पर और उसके रसूलों पर ईमान लाए हैं ये खुदा
का फज़ल है जिसे चाहे अता करे और खुदा का फज़ल (व क़रम) तो बहुत बड़ा है

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ؟ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ؟ مِّن قَبْلِ أَنْ
نَّبْرَأَهَا؟ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ؟

जितनी मुसीबतें रूए ज़मीन पर और खुद तुम लोगों पर नाज़िल होती हैं (वह सब) क़ब्ल इसके कि हम उन्हें पैदा करें किताब
(लौह महफूज़) में (लिखी हुई) हैं बेशक ये खुदा पर आसान है

لَكَيْلَا تَأْسَوْا؟ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا؟ بِمَا ءَاتَكُمْ؟ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ
مُخْتَالٍ؟ فَخُورٍ

ताकि जब कोई चीज़ तुमसे जाती रहे तो तुम उसका रंज न किया करो और जब कोई चीज़ (नेअमत) खुदा तुमको दे तो उस पर
न इतराया करो और खुदा किसी इतराने वाले येखी बाज़ को दोस्त नहीं रखता

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ؟ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ

जो खुद भी बुख़ल करते हैं और दूसरे लोगों को भी बुख़ल करना सिखाते हैं और जो शख़्स (इन बातों से) रूगरदानी करे तो खुदा
भी बेपरवा सज़ावारे हम्दोसना है

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ
وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ
وَرُسُلَهُ ۚ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۚ

हमने यकीनन अपने पैगम्बरों को वाज़े व रौशन मोजिज़े देकर भेजा और उनके साथ किताब और (इन्साफ़ की) तराजू नाज़िल किया ताकि लोग इन्साफ़ पर क़ायम रहे और हम ही ने लोहे को नाज़िल किया जिसके ज़रिए से सख्त लड़ाई और लोगों के बहुत से नफे (की बातें) हैं और ताकि खुदा देख ले कि बेदेखे भाले खुदा और उसके रसूलों की कौन मदद करता है बेशक खुदा बहुत ज़बरदस्त ग़ालिब है

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا ۚ وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ ۚ فَمِنْهُمْ
مُهْتَدٍ ۚ ۚ وَكَثِيرٌ ۚ مِنْهُمْ فَسِقُونَ

और बेशक हम ही ने नूह और इबराहीम को (पैगम्बर बनाकर) भेजा और उनही दोनों की औलाद में नबूवत और किताब मुकर्रर की तो उनमें के बाज़ हिदायत याफ़ता हैं और उन के बहुतेरे बदकार हैं

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَرِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي
قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً ۚ وَرَحْمَةً ۚ وَرَهْبَانِيَّةً ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ
رِضْوَنِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَآتَيْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ۚ
وَكَثِيرٌ ۚ مِنْهُمْ فَسِقُونَ

फिर उनके पीछे ही उनके क़दम ब क़दम अपने और पैगम्बर भेजे और उनके पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा और उनको इन्ज़ील अता की और जिन लोगों ने उनकी पैरवी की उनके दिलों में यफ़क्कत और मेहरबानी डाल दी और रहबानियत (लज्ज़ात से किनाराकशी) उन लोगों ने खुद एक नयी बात निकाली थी हमने उनको उसका हुक्म नहीं दिया था मगर (उन लोगों ने) खुदा की खुशनूदी हासिल करने की गरज़ से (खुद ईजाद किया) तो उसको भी जैसा बनाना चाहिए था न बना सके तो जो लोग उनमें से ईमान लाए उनको हमने उनका अज़्र दिया उनमें के बहुतेरे तो बदकार ही हैं

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَءَامِنُوا ۚ بِرَسُولِهِ ۚ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِن رَّحْمَتِهِ ۚ
وَيَجْعَل لَّكُمْ نُورًا ۚ تَمْشُونَ بِهِ ۚ وَيَغْفِر لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ ۚ رَّحِيمٌ ۚ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो और उसके रसूल (मोहम्मद) पर ईमान लाओ तो खुदा तुमको अपनी रहमत के दो हिस्से अज्र अता फरमाएगा और तुमको ऐसा नूर इनायत फरमाएगा जिस (की रौशनी) में तुम चलोगे और तुमको बख्श भी देगा और खुदा तो बड़ा बख्शने वाला मेहरबान है

لَيْلًا يَعْلَمُ أَهْلُ الْكِتَابِ أَلَّا يَقْدِرُونَ عَلَى شَيْءٍ ۚ مِّن فَضْلِ اللَّهِ ۚ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ
اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

(ये इसलिए कहा जाता है) ताकि अहले किताब ये न समझें कि ये मोमिनीन खुदा के फज़ल (व करम) पर कुछ भी कुदरत नहीं रखते और ये तो यक़ीनी बात है कि फज़ल खुदा ही के कब्ज़े में है वह जिसको चाहे अता फरमाए और खुदा तो बड़े फज़ल (व करम) का मालिक है